

सत्य साहित्य

वर्ष 5 / अंक 3
अप्रैल 2022
Year 5 / No. 3
April
2022

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

116

बलरस ताल धमाल

क्यों मुझे संत सदा अप्रति क्या
जांकी महिमा बेध उचाए । क्यों ...

मेरे कारण छोड़ जगत के भोग पदारथ सो
निश दिन ध्यान घेरें हिरये में सब धलकाज विसार
मैं संतन के पाँधे जावुं जहाँ जहाँ संत सिपाये
चरणन रज निजा अपंग लगावुं शोधुं गात हमारे
संत मिले तब मैं मिल जावुं संत न मुझ से न्यार
बिन सत्संग मुझे नहीं पावे कोरि जतन कर डार
जो संतन के सेवक जग में सो मुझ सेवक सगे
श्रद्धानंद संतजन पाल में सब भव बंधन दारे ॥

(परम पूजनीय महाराज जी की भजन डायरी से)

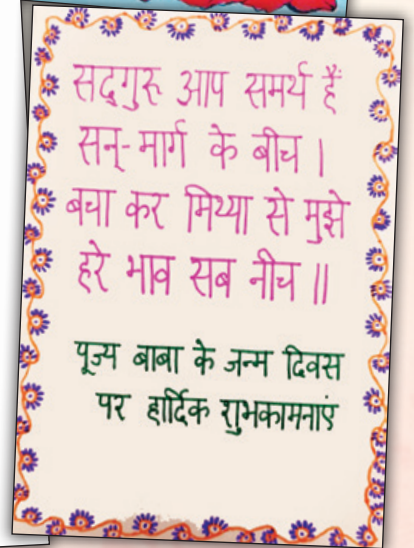
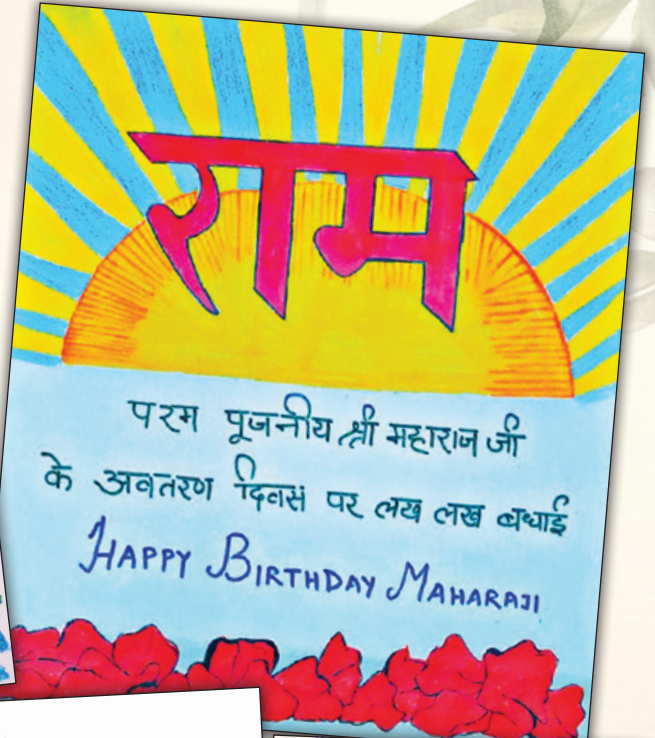
इस अंक में पढ़िए

- भजन
- अवतरण दिवस—बधाई
- Prayer to God
- यात्री—भाग-III
- मेरा जीवन परमात्मा की कृपा
- श्रीरामशरणम् : एक ऐतिहासिक विवरण : लुधियाना
- श्रद्धांजलि
- विभिन्न केन्द्रों से
- कैलेन्डर
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य
मूल्य (Price) ₹5

अवतरण दिवस की बधाई!

परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज एवं
परम पूजनीय श्री महाराज जी
के अवतरण दिवस की लख लख बधाई।



Prayer to God

सत्यानन्द

O Supreme Being! Thou art moonlike charming, most captivating, of all things enchanting in this world, verily thou art the nucleus. Thou art our ever abiding master, thus we are always under thy patronage. Lord! Thou art gracious. Whosoever takes refuge in thee, they are saved. In this world verily thou art the Lord of Sacrifice. Thou alone can inculcate righteousness. In this world where harsh utterances torment our ears, thy words alone are soothing. Therefore O God! Preach unto us thy auspicious sermon, give us worldly people good and beneficial instruction so we may all be uplifted. O Lord and Master of all earthly riches and comforts! Confer upon us the wherewithal so we may tread thy path



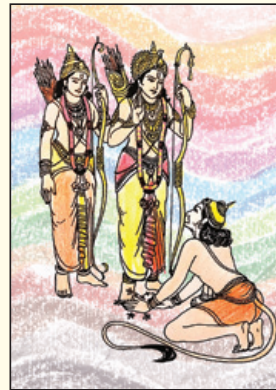
and rise from this wretched and feeble condition to an exalted state.

Lord! Without thy will and support, we would never be successful in our endeavours. We know this for certain that mental, spiritual and in fact every type of bliss is to be got from thee alone, thou art the ocean of bliss, the one and only repository of bliss.

For this reason O Almighty!

We praise and pray to thee, we salute thee. O Light of our souls! Illumine our souls, give us sound counsel so we may be benefitted, we may attain bliss and not waver even slightly from the path of righteousness. This only is our prayer - please accept.

(Parmatam-Milan, Karamyog, page 46) ■



Colourings by children from different centres

यात्री-भाग III “विक्रम खोल की यात्रा”

विक्रम



फिर कभी आना हो या न हो, 'विक्रम खोल' भी देख जाना चाहिये। सायं काल 7:00 बजे गाड़ी जाती थी। अभी बहुत समय था, शीतकाल था, इधर-उधर भटकने की बजाय महानदी के तट पर एक बड़ा रमणीक स्थान था वहीं यात्री बैठ गया और लगा श्रीराम की लीला को निहारने। थोड़ा समय ही बीता था कि चौकीदार आया और कहने लगा कि कथा आरम्भ हो गई है—सुननी है तो चलो! द्वार में पाँव रखा ही था कि चौकीदार ने कहा कि चमड़ा अन्दर नहीं जा सकता। बैग बाहर रख दिया, जेब में बटुवा था, वह भी निकाल कर उसी में रख दिया और अन्दर प्रवेश करके एक कोने में बैठ गया।

रामायण की कथा हो रही थी। कथा वाचक नगर के एक प्रसिद्ध चोटी के डॉक्टर थे, तुलसी का पौधा उनके आगे रखा था। जब कथा समाप्त हुई तो तुलसी के पत्ते और चरणामृत सब को दिए गए।

गाड़ी के छूटने का समय होने वाला था। बैग लेकर यात्री ने दौड़ लगाई। घोर अन्धकार था, पता लगा नहीं—भाग दौड़ में बटुवा कहीं गिर गया। थोड़े से पैसे जेब में रह गये थे, अब उन्हीं को सम्भाल कर रखने लगा।

यात्री वहाँ की भाषा के ज्ञान से भी हीन था। साथ बटुवा खोने से दीन निर्धन भी हो गया। गाड़ी में बैठ कर उसको बटुवे की बार-बार याद आने लगी और दुःख के सागर में डुबकियाँ खाने लगा। इतने में अज्ञात से आवाज आई—गुम होना नहीं चाहिये। इतना अमूल्य जीवन खो गया उसकी चिन्ता कोई नहीं—1 बटुवे की चिन्ता क्यों? राम राम जपते रहो। एक यही तुम्हारा निजी काम है। यात्री थोड़ा अपने आप पर लज्जित हुआ और राम-राम का चिन्तन करने लगा। धीरे-धीरे बटुवे के गुम होने का दुःख भूल गया।

रात के 12 बजे थे, सर्दी तो थी ही। सुकड़ कर बैठा था कि स्टेशन आ गया और गाड़ी रुकी। जल्दी से नीचे उतरा, छोटा सा फ्लैग स्टेशन था, कोई अन्य मुसाफिर उतरा नहीं!

गाड़ी चली गई, और कोई गाड़ी अब आनी नहीं थी। स्टेशन के बाबू निश्चिन्त होकर अपने क्वॉटर में चले गये। प्लैटफार्म पर एक बैंच रखा था, वह यात्री—अकेली जान—जूता उतार कर पाँव ऊपर करके सुकड़ कर बैठ गया और लगा राम—राम जपने। कब सबेरा होगा और किसी से राह पूछेगा—विक्रम खोल की।

मुश्किल से एक घन्टा ही बीता होगा कि दो व्यक्ति वहाँ रात्रि में आ गए। लकड़ियाँ सामने रखीं और आग सुलगा दी उनमें से एक व्यक्ति थोड़ी हिन्दुस्तानी समझता था। यात्री ने उससे विक्रम खोल का रास्ता जानना चाहा। वह हँस पड़ा और टूटे—फूटे शब्दों में कहने लगा कि रास्ता बड़ा कठिन है। अपने आप मिलेगा नहीं। परन्तु यहाँ से दो मील पर ग्राम है, वहाँ एक मारवाड़ी सेठ रहता है। वह बहुत सज्जन पुरुष है—उसे कहना कि मैं M.L.A. (सदस्य विधान सभा) के घर जाना चाहता हूँ। वह अपने किसी आदमी को साथ दे देगा। वह एम. एल. ए. तो कटक में विधान सभा में सम्मिलित होने के लिये गया हुआ है परन्तु उसका नवयुवक सुपुत्र घर पर होगा। वह बहुत ही विनीत और नम्र स्वभाव है, अतिथियों को सैर कराने का उसे बहुत शौक है। सारे गाँव में केवल

वही अँग्रेजी जानता है और पढ़े—लिखे लोगों को मिल कर वह बहुत प्रसन्न होता है। उसे जाकर मिलना, वह स्वयं विक्रम खोल दिखाने ले जायेगा।

यह सब बातें जान कर यात्री को बहुत हर्ष हुआ और अचम्भा भी। कष्ट में तो इस प्रकार परमेश्वर सहायक होते हैं। सम्भव है परमेश्वर हों इस रूप में—प्रभात के समय पधारें हों। इनका नाम तो पूछ लें—इस प्रकार आत्मा की आवाज आ रही थी, तो अकस्मात् उनका नाम पूछा। उन्होंने उत्तर दिया—‘भीम!’ ‘भीम!’ थोड़ी देर में आग का सेक अधिक हो गया। सब पीछे—2 हो गये और मौन भाव से बैठे ऊँघने लगे। जभी यात्री ने आँख खोली—तो न वहाँ भीम था न भीम का साथी था, केवल आग जल रही थी। उनको बहुत आवाजें दीं भीम—भीम। अभी अन्धेरा था। फिर भी अन्धेरे में यात्री कभी इधर भागता, कभी उधर और भीम—भीम करके पुकारता, परन्तु! व्याकुल होकर—ठण्डे साँस भरने लगा! भीम भीम—मैंने तो आपको नमस्कार भी नहीं किया था, प्रभु! मैंने तो चरण भी न छुए। ओह राम! राम! मेरी भूलों को बख्शा देना। हाय राम! मैं तो लुट गया! मुझ पर कितनी कृपा कर गए।
(अगले अंक में जारी रहेगा...)

हारिए न हिम्मत, बिसारिए न राम।
तू क्यों सोचे बंदे, सब की सोचे राम।

होली खेलो रे कन्हाई, होली खेलो रे कन्हाई।
रंग डालो रे रघुराई, रंग डालो रे रघुराई।।

परम पूजनीय महाराज जी के 82वें अवतरण दिवस के अवसर पर
उनके ही श्रीमुख से उनका जीवन वर्णन।

मेरा जीवन परमात्मा की कृपा

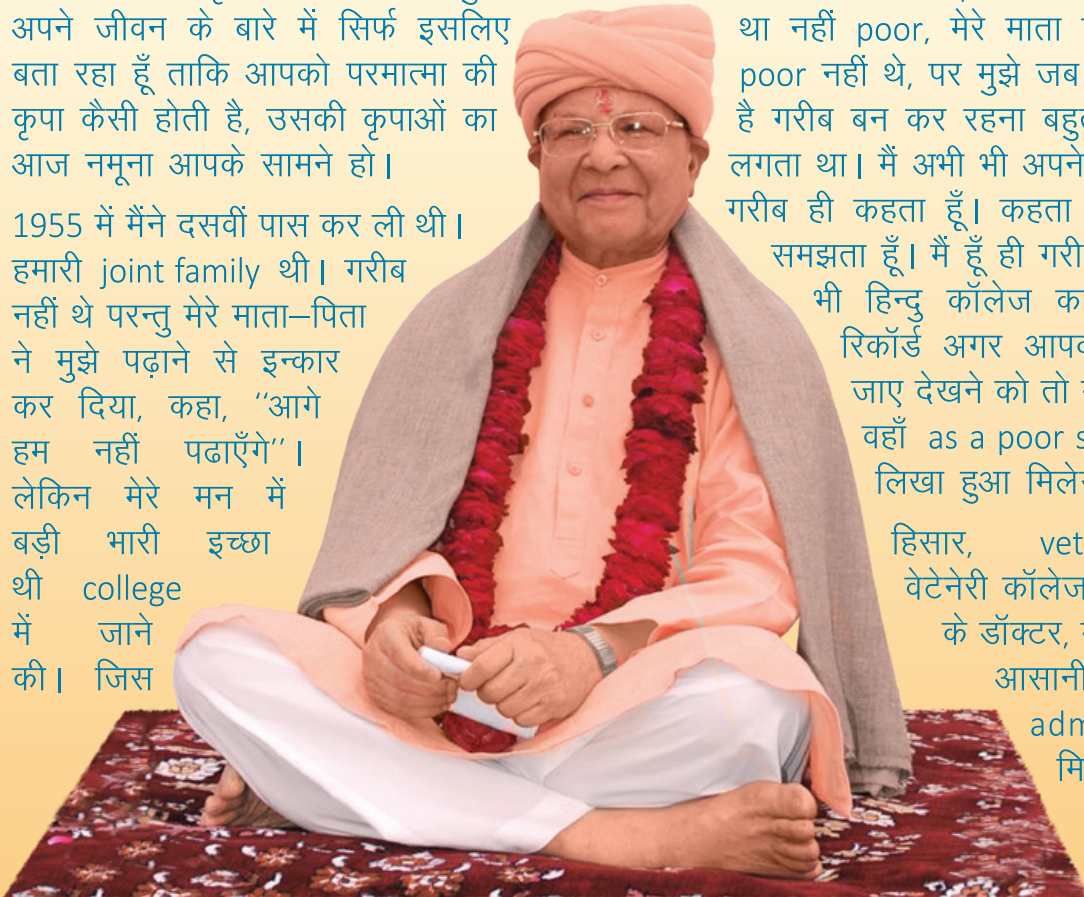
१९२५।१९७१

आज परमेश्वर के लिए शब्द निकले थे कृपा सिन्धु, करुणा निधि, क्षमावान, परम कृपा सुरूप, प्रेम सुरूप परमात्मा। इन शब्दों को सत्य देखना चाहते हो तो मेरी माताओ और सज्जनो मुझे देखो। मेरी याद आए, मैं कभी दिखाई दूँ तो आपके मुख में से झट निकलेगा वाह राम वाह! तू वाकई ही कृपा सिन्धु है। यदि इस जैसे पर कृपा हो सकती है तो फिर सारे संसार पर कृपा हो सकती है। कुछ एक अपने जीवन के बारे में सिर्फ इसलिए बता रहा हूँ ताकि आपको परमात्मा की कृपा कैसी होती है, उसकी कृपाओं का आज नमूना आपके सामने हो।

1955 में मैंने दसवीं पास कर ली थी। हमारी joint family थी। गरीब नहीं थे परन्तु मेरे माता-पिता ने मुझे पढ़ाने से इन्कार कर दिया, कहा, “आगे हम नहीं पढाएँगे”। लेकिन मेरे मन में बड़ी भारी इच्छा थी college में जाने की। जिस

Primary school से पढ़ा था उसी primary school में मुझे untrained teacher की 40रु महीने पर नौकरी मिल गई। नौ महीने नौकरी की, एक दो tuition रखी, दो बच्चियों को पढ़ाता था। 400 से कम ही पैसे थे, तो घर छोड़ कर अमृतसर चला गया। वहाँ हिन्दु कॉलेज में admission ले ली। उन दिनों 10+2 नहीं होती थे, fsc होती थी। दो साल वहाँ पढ़ाई की as a poor student- मैं था नहीं poor, मेरे माता पिता भी poor नहीं थे, पर मुझे जब से होश है गरीब बन कर रहना बहुत अच्छा लगता था। मैं अभी भी अपने आपको गरीब ही कहता हूँ। कहता ही नहीं समझता हूँ। मैं हूँ ही गरीब। कोई भी हिन्दु कॉलेज का पुराना रिकॉर्ड अगर आपको मिल जाए देखने को तो मेरा नाम वहाँ as a poor student लिखा हुआ मिलेगा।

हिसार, veterinary
वेटेनेरी कॉलेज, पशुओं
के डॉक्टर, मुझे बड़ी
आसानी से वहाँ
admission
मिल गई।



चार साल का course किया। मैं हूँ तो पशुओं का डॉ., लेकिन कोई मानने को तैयार नहीं कि मैं डॉक्टर नहीं। यह परमात्मा की कृपा नहीं तो और क्या है? मैं आज आपको कह रहा हूँ कि मैं पशुओं का डॉक्टर हूँ इसके बावजूद भी कोई मानने के लिए तैयार नहीं कि जो ये कह रहा है ठीक है। परमात्मा ने कहाँ—कहाँ मुझे सम्भाल कर और छिपा कर रखा हुआ है, यह परमात्मा की कृपा नहीं तो और क्या है! वहाँ का topper था, scholarship मिलना शुरू हो गया। उन दिनों 50रु महीना scholarship मिलता था। उसमें ठीक गुजारा हो जाता था। माता—पिता को बहुत तकलीफ नहीं दी, कभी देनी चाही ही नहीं, जैसे भी होगा मैं गुजारा करूँगा। चार साल निकल गए। नौकरी लग गई। पंजाब में थोड़ी देर नौकरी की उसके बाद चूँकि वहाँ का topper था, और topper होने के नाते मुझे वहीं पर teaching post मिलनी चाहिए थी, उन दिनों demonstrator कहते थे lecturer नहीं कहते थे। Demonstrator की post, medical colleges में भी ऐसे ही कहते थे और Veterinary colleges में भी ऐसे ही कहते थे। Demonstrator की post मुझे मिल गई, medicine में, clinical medicine में, laboratories का काम करता था।

1962 दिसम्बर, में हिसार पहुँचा और 1964 में पूज्यश्री महाराजश्री का वहाँ आगमन हुआ।

1964 में दीक्षा ली। दीक्षा लेने के बाद पूज्यश्री महाराज को एक पत्र लिखा English में। मुझे पता नहीं था कि कैसे पत्र लिखा जाता है तो मैंने किसी से सलाह ली कि पूज्य श्री महाराज श्री को कैसे पत्र लिखा जाता है। देखो! कैसा बुद्धु मैं हुआ करता था मेरी माताओं और सज्जनो! अब भी वैसा ही हूँ कोई बहुत अन्तर

नहीं है। सांसारिक दृष्टि में बहुत ही निकम्मा और बुद्धु। पत्र लिखा—महाराज, I want to serve the humanity. मुझे यह काम पशुओं का बिल्कुल पसंद नहीं है। न डॉ पसंद है, न मैं इन्हें पढ़ाना ही चाहता हूँ। महाराज जी ने आशीर्वाद भरा पत्र वापिस भेजा। यह 1964 की बात है। 1965 से मेरा AIIMS में shift होने का सम्बंध बनने लग गया। एक पशुओं का डॉ. AIIMS में कैसे? यह परमेश्वर की कृपा नहीं है तो और क्या है? दो महीने के लिए मुझे department वालों ने, एक दफा training के लिए भेजा दिल्ली, वहीं से मेरा सम्पर्क, मेरा सम्बन्ध AIIMS से बढ़ता गया। क्या देखा AIIMS ने मुझमें, मुझे पता नहीं, ऐसे ही न जाने क्या देखा मेरे गुरुजनों ने मुझमें कि मुझे ऐसा बना दिया। ऐसे ही उनके लिए भी कहता हूँ। M.Sc का course वहाँ निकला। कुछ subjects veterinary के और medical के common होते हैं उनमें कुछ subjects में post graduation courses निकले, I was the first one to get it. मुझे वहाँ admission मिल गई।

मैं 1966 में दिल्ली आ गया। यहीं से जिन्दगी शुरू होती है। यहीं से महाराज का प्यार, महाराज का सान्निध्य और श्रीरामशरणम् आना—जाना शुरू हुआ। अनेक सारे subjects जैसे medical college में वैसे ही veterinary college में अनेक सारे subjects. सभी subjects में किसी में distinction, किसी में silver medal, किसी में कुछ किसी में कुछ मानो first class marks में पास हुआ। उन दिनों first class बड़ी कठिन बात होती थी। First division बोलते थे सभी subjects में, दो को छोड़ कर, एक surgery जो मुझे अच्छी नहीं लगती थी। यह काटना—पीटना मुझे अच्छा नहीं

लगता था अतएव इसमें मेरी first division नहीं आई। एक subject जिसमें, मैं जब retire हुआ तो सारे Asia का सबसे बड़ा ocular microbiologist था, उस subject में भी मेरी first division नहीं आई थी। यह परमात्मा की कृपा नहीं तो और क्या है!

मेरी याद आए, मैं कभी दिखाई दूँ तो आपके मुख में से झट निकलेगा वाह राम वाह! तू वाकई ही कृपा सिन्धु है। यदि इस जैसे पर कृपा हो सकती है तो फिर सारे संसार पर कृपा हो सकती है। कुछ एक अपने जीवन के बारे में सिर्फ इसलिए बता रहा हूँ ताकि आपको परमात्मा की कृपा कैसी होती है, उसकी कृपाओं का आज नमूना आपके सामने हो।

दिल्ली पहुँच गया। दो साल की पढ़ाई थी। मत सोचना कि आज मैं जब कभी भी यह सब याद करता हूँ, मुझे परमात्मा की कृपा के अतिरिक्त और कुछ नहीं दिखाई देता। यह सब सुन कर मत सोचना कि यह इतना लायक है, इतना योग्य है, इतना intelligent है। छिः!! बिल्कुल नहीं! कतई नहीं!! दिल्ली आने पर डॉ. राम मेरे मित्र बन गए। एक ही hostel में रहते थे। खाना इकट्ठा खाते थे, इन्तज़ार करते थे ये मेरी। यह तो असली के डॉ. थे MBBS, के बाद MD कर रहे थे और मैं पशुओं के डॉक्टर के बाद वहाँ M.Sc कर रहा था। इनका मुझे मित्र स्वीकार कर लेना, ये भी परमात्मा की कृपा नहीं तो और क्या है। कहाँ कोई मेलजोल ही नहीं! ये कितने बड़े लोग और मैं उतना छोटा।

देवियो सज्जनो! मुझे चलती-फिरती microbiology की dictionary लोग कहने लग गए! ये कैसे हुआ यह सब कुछ। just cannot express in words. महाराज के strict instructions थे, श्रीरामशरणम् नहीं आना। देखो! कोई है, जिसे प्रेम जी महाराज

कहें कि श्रीरामशरणम् नहीं आना! मैं हूँ! जिसे कहा श्रीरामशरणम् नहीं आना। मैं तेरे पास आया करूँगा और यह बात उन्होंने निभाई! वही आया करते थे। एक इतवार को मुझे जाने की इज़ाज़त थी। इतवार के इतवार श्रीरामशरणम् जाया करता था। बहुत पढ़ने की जरूरत थी दो

साल। I started from scratch, महाराज ने किस प्रकार से सम्भाला होगा मुझे, परमेश्वर ने किस प्रकार से, मेरे बच्चों बच्चियों, मेरे ऊपर कृपा की। खासकर आपके लिए, यह बातें बहुत अनुकरणीय होनी चाहिए। Depend करो परमात्मा के ऊपर, depend करो गुरु महाराज के ऊपर।

शाम को आते, आकर कहते, थक जाए पढ़ते-पढ़ते, महाराज के शब्द, "पढ़ाई करता-करता थक जाए (मेरा 6 नं. hostel में 51 नं. कमरा होता था, last कमरा होता था उसके ऊपर छत थी यह महाराज को पता था) छत पर जा कर deep breathing कर लिया कर।" महाराज को, जब भी आते थे मेरे पास तो (mess से दूध नहीं मिलता था) तो काली coffee महाराज को पिलाया करता। स्वयं भी काली coffee पीता था, महाराज को भी काली coffee पिलाया करता। महाराज देख कर काली coffee पी कर तो कहते पढ़ाई करते-करते midnight के बाद, जिस वक्त जब थक जाए तो ऐसी काली coffee पीकर तो फिर पढ़ने लग जाया कर।

ऐसे प्रश्न मेरे से पूछे गए, शायद microbiology department AIIMS का, यदि कोई पुराने साधक, कुछ पुराने लोग हैं वहाँ पर, मेरे teachers कोई नहीं रहे वहाँ पर, पर मेरे colleague उन दिनों कहा करते थे कि मेरे से वही प्रश्न पूछे गए जो सिर्फ मुझे ही आते थे। Exam लेने वाले examiners जो बाहर से Calcutta से Bombay से आते थे, आए, आ कर कहने लगे—तीन दिन का Exam होता था, practical फिर अन्तिम viva voce होता था जिसमें सब होते थे, any body can ask any question. बड़ी मिट्टी पलीत करते थे। Examiners आखिरी दिन कहते हैं कि पास तो हमने तुम्हें पहले दिन ही कर दिया था .. यह शब्द मेरे दिमाग में गूँजते हैं तो मुझे परमात्मा की कृपा भरपूर!! पास तो तेरे को पहले दिन ही कर दिया था, उसके बाद तो हमने तेरे से सीखा है! यह परमात्मा की कृपा नहीं तो और क्या है? पास हो गए! बहुत अच्छी तरह से पास हुआ। उनको पसन्द आ गया। उन्होंने मुझे वहीं नौकरी offer कर दी as a research scholar, class 1 post। M.Sc करते हुए 300 रु scholarship, 300 रु राम को मिला करते 300 रु मुझे, 300 ही सबको मिला करते थे। अचानक double salary हो गई 600/— Research officer. थोड़ी देर की post के बाद फिर मुझे आँखों के हस्पताल RP center में (Prof. Aggarwal थे, नहीं रहे बेचारे अब, उनको कुछ मेरा पता लगा कि मेरा thesis काम इस प्रकार का है तब मुझे PHD में भी admission मिल गई वहीं पर) मुझे वहाँ ले आए, adhoc lecturer. लम्बी बातें हैं थोड़ी सी बात करके तो क्षमा माँगूँगा।

मेरी first appointment RP center में as ad hoc lecturer. उस वक्त Interview

हुआ। Interview में कोई दो चार लोग नहीं बैठते, AIIMS में, इतना बड़ा bench होता है interview के लिए। Adhoc post मिल गई lecturer बना, assistant professor बना, associate professor बना। Associate professor बनकर voluntary retirement ले ली और मनानी चला गया। Last pay slip होती है वह sign होने के लिए होती है, मेरे पास वहाँ पहुँची, उस पर associate professor नहीं लिखा हुआ था उस पर लिखा हुआ था additional professor! यह कैसे हुआ!! उन्होंने कहा तेरे जाने के बाद सरकार का rule बन गया हुआ है कि यहाँ का हर associate professor is promoted to additional professor. यह परमात्मा की कृपा नहीं तो क्या है? मैं छोड़ कर चला गया, उसके बाद भी promotion!

मेरे बन्धुओ ध्यान से सुनो, 20—22 साल मैंने वहाँ नौकरी की। Adhoc lecturer से शुरू हुई उसके बाद कितने steps ऊपर 20 साल में, एक के बाद एक परमात्मा की करनी देखो परमात्मा की कृपा देखो, इतनी posts पर मेरे साथ परमात्मा ने कोई दूसरा candidate appear नहीं होने दिया। I was the only candidate for promotion! यह परमात्मा की कृपा नहीं तो और क्या है! मेरी अन्तिम promotion के वक्त director और जो selection committee थी उनके पास application जाती हैं scrutiny के लिए। Scrutiny के लिए गई तो उन्होंने objection किया कि एक यही है कि इसके साथ कोई दूसरा व्यक्ति—संसार भर के लोगों को apply करने की इजाजत थी। किसी दूसरे व्यक्ति ने apply नहीं किया हम इसे नहीं मानते इसलिए the post may be readvertised. फिर से

advertise हुई। सारा selection postpone हो गया because of me. सभी papers में post advertise हुई। अनेक सारे पेपरों में जितने भी papers हैं English के papers सब papers में Associate professor of Microbiology in RP Center उसके लिए applications are invited. फिर कोई नहीं! फिर किसी ने apply नहीं किया, तो मुझे अकेले को ही interview करना पड़ा! वहाँ भी समस्या हुई कि I just completed five years. Assistance professor के minimum पाँच साल पूरे होने चाहिए। मेरे पाँच साल अभी पूरे हुए ही थे। मुझे इन्होंने कहा कोई बात नहीं, क्या होगा यही होगा न selection नहीं होगी, you apply। Administrative officer दूसरे लोग सब मुझ पर मेहरबान थे! यह परमात्मा की कृपा नहीं तो और क्या है! Apply कर दिया, selection तो हो गई लेकिन announcement नहीं की जा रही।

वहाँ पर फिर काफी लोग होते हैं, director, health secretary, General health services, जो India का एक होता है, मेरे पुराने professor microbiology के, यहाँ के professor, खूब लोग meeting में थे वहाँ पर कोई decision न हो पाया। उन्हें लगा कि he has just completed five years। बाकी लोग 10–10 साल 15–15 साल हो गए उनको assistant professor बने हुए हैं इसको उनके मुकाबले में कैसे associate professor promote कर दें? बहुत struggle हुई, बहुत आपस में arguments हुए आखिर उन्हें मुझे associate professor बनाना ही पड़ा। यह परमात्मा की कृपा नहीं तो और क्या है? कहा कोई एक base बताओ, minimum qualification है

five years service, he has completed ये जितने सारे associate professors जिनको हमने promote किया है उनके मुकाबले इसकी double publications हैं। मैं इसको reject करूँ तो किस basis पर reject करूँ? किस basis पर इसकी promotion मैं रोऊँ? कभी मेरी याद आए यह सब याद करना, मुझे याद नहीं करना, परमात्मा की कृपा को याद करना, वाह परमात्मा वाह! तेरी कृपा अपरम्पार! सर्वोपरि है सर्वसर्वा है! यहाँ की कहानी तो आप बहुत अच्छी तरह जानते हो। क्या कहूँ मैं इसके बारे में। कल तक कोई न पूछने वाला, इस वक्त हर कोई पूछता है! यह परमात्मा की कृपा नहीं तो और क्या है?

संत नहीं हूँ, लेकिन कोई मानने को तैयार नहीं है कि यह संत नहीं है। यह परमात्मा की कृपा नहीं तो और क्या है? मैं सन्यासी नहीं हूँ पर कोई मानने को तैयार नहीं है कि यह संन्यासी नहीं है। कोई मानने को तैयार नहीं। यह परमात्मा की कृपा नहीं तो और क्या है! मुझे तो और कुछ दिखाई नहीं देता। मैंने सन्यास नहीं लिया हुआ, हरकी पौड़ी जाकर पुराने कपड़े उतार दिए थे यह ऊपर वाला बाबा का चिन्ह ले लिया और नीचे वाला कपड़ा प्रेम जी महाराज का चिन्ह ले लिया और कपड़े बदल लिए ये संन्यास थोड़ी है!! यह विधिवत् संन्यास नहीं है!! कोई मानने को तैयार नहीं। यह परमात्मा की कृपा नहीं मेरे बन्धुओं तो और क्या है!

कुछ गलत न सोचना। परमेश्वर क्षमा करें, मेरे गुरुजन क्षमा करें आज कुछ अपने बारे में ऐसे ही मुख से निकल गया। सब क्षमा करें, आप भी क्षमा करें।

(परम पूजनीय महाराज जी का प्रवचन का अंश 14.4.2011) ■

श्रीरामशरणम् लुधियाना-एक ऐतिहासिक विवरण

(‘श्रीरामशरणम् : एक ऐतिहासिक विवरण’ के अन्तर्गत लेखों की अगली कड़ी)



11 दिसम्बर, 1995 को राम जी की असीम कृपा और गुरुजनों के आशीर्वाद से परम पूजनीय श्री महाराज जी का पहली बार लुधियाना में आगमन हुआ। तब महाराज जी के सान्निध्य में किचलू नगर के श्री राम दरबार मंदिर में ‘श्री अमृतवाणी जी’ का पाठ रखा गया। ‘श्री अमृतवाणी जी’ के पाठ और प्रवचन के लिए लुधियाना के बहुत साधक आए। तदुपरांत, महाराज जी ने हम चार-पाँच साधकों को अपने पास बिठा कर पूछा, “आपको quantity चाहिए या Quality?” हमने महाराज जी की तरफ देखा और बोला कि महाराज जी हमें quality चाहिए। यह सुनकर महाराज जी अति प्रसन्न हुए फिर समझाया, “बेशक, तुम दो ही व्यक्ति हो, अमृतवाणी जी का पाठ समय पर शुरू कर दो। पीछे मुड़कर नहीं देखना कि कौन आया है और कौन नहीं?” महाराज जी की बातें सुनकर हम आश्चर्यचकित थे! ऐसी बातें तो कोई विरला संत ही करता है। महाराज जी ने श्री राम दरबार मंदिर में प्रत्येक रविवार प्रातः नौ से साढ़े दस बजे तक का समय सत्संग के लिए नियत कर दिया।

20 जनवरी 1998 के दिन महाराज जी ने लुधियाना में श्री रामशरणम् बनाने की बात कही। उन्होंने कहा कि करवाने वाले तो गुरुजन ही हैं और यह काम जब भी होगा गुरुजनों की कृपा से ही होगा। गुरु ही जानता है कि किस कार्य की सफलता किस समय उचित एवं हितकारी होगी। ऐसी प्रेरणा देकर महाराज जी मुंबई चले गए। मुंबई से पत्र लिखकर महाराज जी ने निर्देश दिया कि परमेश्वर कृपा से उनके लौटने तक कागजी कार्यवाही पूर्ण हो जाए। साथ ही यह भी लिखा कि गुरु आज्ञानुसार पक्का निर्णय ले कर ही लुधियाना से निकलूँगा, वह निर्णय क्या होगा यह उसी समय पता चलेगा।

महाराज जी के इस पत्र को पढ़कर सभी श्री रामशरणम् के निर्माण कार्य में जुट गए। महाराज जी का सुझाव था कि श्री रामशरणम् भवन में 500 की capacity के दो भवन हों जिनमें सुंदर sound system की व्यवस्था हो। इसके अतिरिक्त 100 से 150 की capacity का एक जाप का sound proof कमरा बनाया जाए जिसका प्रयोग meditation के लिए किया जाए, जहाँ बैठकर

शांति मिले। साथ में उन्होंने यह भी लिखा कि जाप के इस sound proof कमरे का प्रयोग दीक्षा के लिए भी किया जा सकता है।

3 अप्रैल, 1998 को परम श्रद्धेय श्री महाराज जी ने अपने कर कमलों से लुधियाना श्रीरामशरणम् की नींव रखी जिसका उद्घाटन महाराज जी द्वारा 22 अक्तूबर 2000 को किया गया। उससे पूर्व 16-22 अक्तूबर से अखंड जाप हुआ। जिसके उपरांत हवन, सत्संग

हॉल का उद्घाटन, अमृतवाणी जी का पाठ, प्रार्थना और महाराज श्री का प्रवचन और आरती हुई। महाराज जी ने बताया कि 'श्री रामशरणम् के दो अर्थ हैं, श्री राम जी जहाँ शरण देते हैं और जो रक्षक हैं। हम सब यह धारणा करते हैं कि 'श्री राम शरणं गच्छामि'। हम सब साधक गुरुजनों का हार्दिक धन्यवाद करते हैं जिन्होंने हमें "श्री रामशरणम्" की शरण में लिया। ■

श्रद्धांजलि

श्री वीरेन्द्र कत्याल के आकस्मिक व असामयिक निधन से सारे श्री रामशरणम् परिवार को गहरा धक्का लगा है। श्री रामशरणम् संस्था के लिए यह अपूर्णीय क्षति है। वे न केवल वरिष्ठ ट्रस्टी बल्कि विनम्र मार्गदर्शक, शक्ति के स्तम्भ, अनुकरणीय साधक, थे। श्री वीरेन्द्र जी ने अनेक वर्षों तक पूर्णतया समर्पित भाव से गुरुजनों के निदेशों का अक्षरशः पालन किया। वे अत्यन्त विनम्र, सहज निरभिमानी, सुलझे हुए आदर्श साधक थे।



जैसा कि सर्वविदित है श्री वीरेन्द्र कत्याल जी को तीनों गुरुजनों के सान्निध्य का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्री वीरेन्द्र कत्याल जी लाला भगवानदास कत्याल जी के सपुत्र थे। उनका जन्म 26 दिसम्बर, 1947 को हुआ था। लाला भगवानदास जी, परम पूजनीय स्वामी जी महाराज के अति प्रिय एवं अंतरंग शिष्य थे। उनका श्री रामशरणम् संस्था के लिए बहुत अधिक योगदान है। परम पूजनीय स्वामी जी महाराज अपने दिल्ली प्रवास के दौरान अकसर उनकी बंगलो रोड कोठी में ही रहा करते थे जिसके कारण श्री वीरेन्द्र जी को जन्म से ही परम पूजनीय स्वामी जी महाराज का सान्निध्य प्राप्त हुआ। परम पूजनीय स्वामी जी महाराज के निर्वाण के समय, 13 नवम्बर 1960 को वे वहीं

उपस्थित थे। उन्हें छोटी सी आयु से ही अपने पिता के आध्यात्मिक मूल्य एवं संस्कार मिले। पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज एवं डॉ. विश्वामित्र जी महाराज का विशेष प्यार एवं आशीर्वाद भी उन्हें प्राप्त होता रहा।

श्री वीरेन्द्र जी ने संगीत अपने परिवार से विरासत में पाया और अपने सुमधुर भावपूर्ण भजनों से साधकों को आनन्दित किया। श्री महाराज जी ने श्री वीरेन्द्र जी को श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट का ट्रस्टी मनोनीत किया और उनको महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ सौंपी। उन्होंने सौंपे कार्यों को पूर्ण निष्ठा से निभाया। परम पूजनीय डॉ. विश्वामित्र जी महाराज के निर्वाण के पश्चात् ट्रस्ट की बढ़ी हुई जिम्मेदारियों का उन्होंने अपने असीम अनुभव व दूर दृष्टि से निर्वहण करते हुए संस्था का मार्गदर्शन किया। अन्तिम दस वर्षों में उनकी भूमिका अविस्मरणीय रही।

श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट उनके अनथक, एवं समर्पित योगदान के लिए उनका ऋणी रहेगा। हम विनम्रतापूर्वक प्रभु राम एवं परम पूजनीय गुरुजनों से प्रार्थना करते हैं उनकी पावन आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दें।

श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, दिल्ली ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

दिसम्बर 2021 से फरवरी 2022

- **धारीवाल**, पंजाब में 24 दिसम्बर को नवनिर्मित श्री रामशरणम् का भव्य उद्घाटन हुआ जिसके बाद 74 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **उज्जैन**, मध्य प्रदेश में 26 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 142 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **फरीदाबाद**, हरियाणा में 26 जनवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 125 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **बिलासपुर**, हिमाचल प्रदेश में 16 फरवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 37 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रामतीर्थ**, मध्यप्रदेश में 19 से 22 फरवरी तक चार दिवसीय सत्संग समारोह हुआ। तीन दिवसीय अखण्ड जाप की पूर्ति के पश्चात् 22 फरवरी को विशेष सत्संग के उपरान्त 85 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली श्रीरामशरणम्** में जनवरी, फरवरी में 57 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **अमरपाटन**, मध्यप्रदेश में 1 मार्च को श्रीरामायण जी का अखण्ड पाठ हुआ। 2 मार्च को 573 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

मार्च 2022 में होने वाले कार्यक्रम

- **होशियारपुर**, पंजाब में 6 मार्च को एक दिवसीय खुला सत्संग होगा जिसमें नाम दीक्षा होगी।
- **जबलपुर**, मध्यप्रदेश में 12 एवं 13 मार्च को दो दिवसीय खुला सत्संग होगा जिसमें नाम दीक्षा होगी।
- **दिल्ली श्रीरामशरणम्** में परम पूजनीय डा. विश्वामित्र जी महाराज के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में 15 मार्च को प्रातः दैनिक सत्संग के बाद श्री रामायण जी के अखण्ड पाठ का शुभारम्भ होगा जिसकी पूर्ति 16 मार्च को प्रातः

होगी।

- **दिल्ली श्रीरामशरणम्** में 16 से 18 मार्च तक होली सत्संग होगा।
- **इन्दौर**, मध्य प्रदेश में 21 से 24 मार्च तक तीन रात्रि साधना सत्संग होगा जिसमें नाम दीक्षा होगी।
- **हिसार**, हरियाणा में 26 एवं 27 मार्च को दो दिवसीय खुला सत्संग होगा जिसमें नाम दीक्षा होगी।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- **तारागढ़**, पंजाब में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य तीव्र गति से चल रहा है। लगभग दो महीने में पूरा होने की आशा है। ■

Online Programmes held between 21 December 2021 and 22 January 2022

With the grace of Pujniya Gurujans, satsangs have been enthusiastically attended by sadhaks. They have been broadcast through Shree Ram Sharnam's official Facebook and Youtube channel. Daily average attendance had been ever growing and Sunday Satsangs are also being attended and enjoyed by sadhaks around the world. Average attendance at the daily satsangs online is more than 12000. Sunday satsangs are attended by about 15000 devotees.

Special programmes have been attended by large numbers. The Special event to mark the celebration of Tilak Divas of Pujniya Maharaj ji on 9 December 21 and Akhand Geeta Paath was attended by 2025 Over 31 December – January 1, Akhand Ramayan Paath January was attended by 18,217.

On all Shree Ram Sharnam Delhi's platforms such as Instagram and Twitter, posts and messages are enjoyed by devotees.. ■

SADHNA SATSANG (APRIL TO SEPTEMBER 2022)

Haridwar	12 to 17 April	Tuesday to Sunday
Haridwar (Only for Jhabua Sadhaks)	10 to 13 May	Tuesday to Friday
Haridwar (Only for Jhabua Sadhaks)	15 to 18 May	Sunday to Wednesday
Haridwar	30 June to 3rd July	Thursday to Sunday
Haridwar	8 to 13 July	Friday to Wednesday
Haridwar (Ramayani Satsang)	25 Sept to 4 Oct	Sunday to Tuesday

POORNIMA APRIL TO SEPTEMBER 2022

April	16	Saturday
May	16	Monday
June	14	Tuesday
July	13	Wednesday
August	12	Friday
September	10	Saturday

DIKSHA IN SHREE RAM SHARNAM DELHI APRIL TO SEPTEMBER 2022

April	10	Sunday	10.30 AM
May	29	Sunday	10.30 AM
July	13	Wednesday	4.00 PM
August	21	Sunday	10.30 AM
September	11	Sunday	10.30 AM

OPEN SATSANG 2022

Jhabua (Maun Sadhna)	1 to 10 April	Friday to Sunday
Bhareri	24-Apr	Sunday
Rattangarh	30 April-1 May	Saturday to Sunday
Kandaghat	08-May	Sunday
Manali	14 to 16 June	Tuesday to Thursday
Delhi	27 -29 July	Wednesday to Friday
Rohtak	13 -14 August	Saturday to Sunday
Rewari	3-4 September	Saturday to Sunday

DIKSHA IN OTHER CENTRES APRIL TO SEPTEMBER 2022

Jawali, HP	Sunday	17-Apr
Bhareri, HP	Sunday	24-Apr
Rattangarh, Rajasthan	Saturday	30-Apr
Kandaghat, HP	Sunday	08-May
Chambi, HP	Sunday	22-May
Manali, HP	Thursday	16-Jun
Rohtak, Haryana	Sunday	14-Aug
Rewari, Haryana	Sunday	04-Sep

प्रभु जी तुम बड़े प्यारे हो,
प्रभु जी तुम बड़े न्यारे हो।
प्रभु जी तुम ही तो हमारे हो,
प्रभु जी तुम बड़े प्यारे हो।

Dear Children, Thank you very much for the beautiful colourings which you have submitted. Here are some of them.



यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर-IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित
एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, 216, सेक्टर-4, आई.एम.टी. मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा-122051 से मुद्रित। संपादक: मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and
printed at Rave Scans Private Limited, 216, Sector-4, IMT Manesar, Gurugram, Haryana-122051. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com

वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org